Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur

Answer Script Details
Barcode 4897756

Roll No. 23081000411
Total Mark 59/75.00

Exam BACHELOR OF ARTS_DEC-2023
Subject A020101T - SANSKRIT PADHYA SAHITYA EVAM VYAK

Question wise Mark Summary

Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark
1A	4/5						
1B	4/5						
1C	4/5						
1D	4/5						
1E	3/5						
1F	4/5						
1G	3/5						
1H	4/5						
1I	3/5						
2	NA/15						
3	NA/15						
4	13/15						
5	NA/15						
6	13/15						
7	NA/15						
8	NA/15						
9	NA/15						

Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University
Kanpur, Uttar Pradesh

PART-II

Date of Exam 20/12/23 Shift I st Room No. 31
Paper Code A020101T Subject Sanskrit Year/Sem I st
Name of Candidate Sneha Shukla
Roll No. 2 3 0 8 1 0 0 0 4 1 1

Signature of Candidate: Sneha
Signature of Invigilator
COE Facsimile

MARKS OBTAINED

Q.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
(a)										
(b)										
(c)										
(d)										
(e)										
(f)										
(g)										
(h)										
(i)										
(j)										
Total										

Total Marks in Figures | Max. Marks
Total Marks in Words

A 0 2 0 1 0 1 T
Paper Code

Signature of Evaluator

Course B.Sc
Session 2023 Year/Semester I st
Subject Name Sanskrit
Medium English ○ Hindi ●

Paper Code
A 0 2 0 1 0 1 T

Exam Date
2 0 1 2 2 0 2 3

Name of Candidate
S N E H A S H U K L A

Father's Name
A T U L K U M A R

महाविद्यालय का कोड
College Code
A U 0 3

परीक्षा केन्द्र का कोड
Exam Centre Code
A U 0 3

परीक्षा का प्रकार
Type of Exam
संस्थागत Regular ● भूतपूर्व छात्र Ex-Student ○
व्यक्तिगत Private ○ बैक पेपर परीक्षा Back Paper Exam ○

ANSWER BOOKLET NO.
4897756

A 0 2 0 1 0 1 T
Paper Code

नामांकन संख्या
Enrollement Number C S J M A 2 3 0 0 0 0 0 3 8 5 4

परीक्षार्थी अनुक्रमांक संख्या Candidate's Roll Number
2 3 0 8 1 0 0 0 4 1 1

पेपर कोड Paper Code
A 0 2 0 1 0 1 T

Signature of Candidate: Sneha

Signature of Invigilator

C S Facsimile

COE Facsimile

नोट- 1. परीक्षार्थी को निर्देशित किया जाता है कि आवरण पत्र के पृष्ठ भाग पर अंकित सभी निर्देशों को सावधानी पूर्वक पढ़ें।
2. कॉलम में भरी जाने वाली प्रविष्टियाँ बायीं तरफ से शुरू की जायें। 3. गोलों को काले या नीले बालपेन से भरा जायें।

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-I

1. Read the instructions carefully given on the answer script and admit card.
2. Write Date of Exam, Shift, Paper Code & Name of Subject Correctly.
3. Write Name & Roll No. Correctly.
4. Write Semester & Branch Correctly.

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश

1. प्रवेश पत्र एवं उत्तर पुस्तिका पर दिये गये निर्देशों को ध्यान से पढ़ें।
2. कवर पृष्ठ के दूसरी तरफ कुछ न लिखें।
3. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों पर दोनों तरफ लिखें।
4. प्रश्न पत्र पर अपने अनुक्रमांक के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
5. प्रश्न पत्र कोड एवं प्रश्न पत्र ID सावधानी पूर्वक लिखें।
6. अपनी स्थिति स्पष्ट लिखें।
7. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों की संख्या देखें। अगर उत्तर पुस्तिका में पृष्ठ (1-24) से कम है या फटे हुए है, तो परीक्षा शुरू होने के पूर्व दूसरी उत्तर पुस्तिका ले लें।
8. प्रश्नपत्र को देख, यदि प्रश्नपत्र के विषय कोड, विषय का नाम तथा प्रश्न में कोई त्रुटि है तो उसके परीक्षा प्रारंभ होने के 30 मिनट के अन्दर कक्ष निरीक्षक को तत्काल सूचित करें, उसके बाद विश्वविद्यालय द्वारा कोई बदलाव नहीं की जायेगी।
9. प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिये पेंसिल का प्रयोग न करें।
10. बी कोपी या अतिरिक्त ग्राफ नहीं दिया जायेगा।

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-III

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ boxes.
2. Carefully study the example before you start marking.
3. As shown in the example below, blacken the circles completely.

4. Make no Stray marks on this sheet.
5. **DO NOT WRITE OR MARK ON THE BAR CODE.**

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE

1. Read the instructions carefully given on the Question Paper, Admit Card & Answer Script.
2. Do not write anything on back side of the cover page.
3. Write on both sides of pages of answer book.
4. Do not write anything on question paper except Roll Number.
5. Write Paper Code & Question Paper Id carefully.
6. CHECK the number of pages (1-24) or any other kind of damage in your answer script, if found than change the answer script immediately before the commencement of examination.
7. CHECK the Question Paper for any kind of discrepancy e.g. Subject Code, Su Name, and Question of the Question Paper during first THIRTY MINUTES of t commencement of the exam, so that it can be corrected in TIME. After that no corrections shall be entertained by the university.
8. Do not use pencil for answering the question.
9. Write status correctly e.g. those appearing in carry over papers should fill in stat as Carry Over. Those appearing as Ex- Students should fill in status as ex.
10. No supplementary answer book & graph paper will be provided.

IN ORDER TO AVOD UFM (UNFAIR MEANS) :

1. The Roll No. and Answer Book no. found elsewhere or any other symbol found in the answer book will be treated as unfair means.
2. Any tempering of Bar Code and Booklet no shall be treated as Unfair Means.
3. Do Not bring the materials like slip of paper/mobile/digital diaries/ study material/ revision notes in examination hall. Possession of the mobiles/ digital diaries/electronic/digital/ watch and any other electronic gadget except memory less scientific calculator shall be considered as UFM case.
4. Do not keep or paste currency note in answer script it shall be consider as UFM.

अनुचित साधन से बचने हेतु :

1. उत्तर पुस्तिका के निर्देशित स्थान को छोड़कर अनुक्रमांक एवं उत्तरपुस्तिका का क्रमांक कहीं और न लिखे तथा कोई भी चिन्ह न बनायें क्योंकि यह अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।
2. उत्तर पुस्तिका के बारकोड अथवा उत्तर पुस्तिका संख्या पर छेद छाद करने पर अनुचित साधन प्रयोग माना जायेगा।
3. परीक्षा कक्ष में किसी वस्तुएं साथ न लायें, जैसे लिखे हुए कागज के टुकड़ें, मोबाईल, डिजिटल डायरी, डिजिटल वॉच, कॉपी, पुस्तक यह सभी वस्तुएं जो अनुचित साधन के अन्तर्गत आती है। केवल संशोधित प्रश्नपत्र में ही मेमोरी लेस साइंटिफिक कॉल्कुलेटर ले जाने की अनुमन्यता होगी।
4. उत्तर पुस्तिकाओं में रूपये न रखें न ही उत्तर पुस्तिका में चिपकायें। ऐसा करना अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-IV

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ Boxes.
2. Use blue or black ball point pen for filling the circles.

	1	8	1	5	4	3	2	1	6	9
0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
1	●	1	●	1	1	1	1	●	1	1
2	2	2	2	2	2	2	●	2	2	2
3	3	3	3	3	3	●	3	3	3	3
4	4	4	4	4	●	4	4	4	4	4
5	5	5	5	●	5	5	5	5	5	5
6	6	6	6	6	6	6	6	6	●	6
7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7
8	8	●	8	8	8	8	8	8	8	8
9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	●

Note- If your Roll No. is of 10 digits. Please leave first three columns .

खण्ड - 'अ'

लघुउत्तरीय प्रश्न

उत्तर - 1 (क)

भारवेरर्थगौरवम् :-

'भारवेरर्थगौरवम्' की उपाधि महाकवि 'भारवि' को प्राप्त है। इस का अर्थ है कि भारवि द्वारा रचित श्लोकों में शब्दों के अर्थों में बहुत अधिक गहनता होती है, वह कम शब्दों में अधिक बातों को अपने श्लोकों में पिरो कर श्लोक की महिमा को बढ़ा देते हैं। कुछ महर्षियों ने इन्हें 'गागर में सागर भरना' उपाधि से भी निरूपित किया है।
उन्होंने अपने श्लोक 'सहसा विदधीत न क्रियाम् अविवेकः' द्वारा यह सिद्ध किया है, इन्हें यह उपाधि सही प्राप्त हुई है। उनकी रचना 'किरातार्जुनीयम्' की हर सूक्ति यही सिद्ध करती है कि उन्होंने कम शब्दों में अपनी बातों को हम तक यथार्थ पहुँचाया है।
भारवेरर्थगौरवम् का सार ही यही है कि वह अपने श्लोकों में बहुत ही कम शब्दों द्वारा नीति व यथार्थ बातों को पाठक तक पहुँचा देते हैं। उनकी इस कलाकृति को 'बृहत्त्रयी' में उच्च स्थान प्राप्त है।
अतः उनकी रचना द्वारा हम यह कह सकते हैं कि उन्हें 'भारवेरर्थगौरवम्' का अति उचित ज्ञान था।
यही इसका संक्षिप्त में स्पष्टीकरण है।
'भारवेरर्थगौरवम्' का स्पष्ट अर्थ - कम शब्दों में अधिक सार से है।

Do Not Write anything in this Portion

उत्तर - 1 (ख)

महाकवि भारवि :-

'किरातार्जुनीयम्' के रचयिता महाकवि भारवि एक उच्चकोटि के विद्वान है। उन्हें 'भारवेरर्थगौरवम्' की उपाधि से भी जाना जाता है। इनके पिता का नाम 'श्रीधर' व माता का नाम सुशीला था। इनका विवाह 'रसिकवती' नामक कन्या से हुआ था।

महाकवि भारवि का स्थिति काल :-

महाकवि भारवि का स्थितिकाल का विद्वानों में मतभेद भी है परन्तु इनका स्थिति काल 600 ई०पू० को अधिकतर विद्वानों ने इस पर सहमति प्रदान की है।
इनके बारे में कहा जाता है यो अपने पिता को अधिक प्रसन्न नहीं करते है क्योंकि इन्हें घमण्ड हो गया था कि ये अत्याधिक विद्वान हैं। इनके पिता भी विद्वान थे।
इन्होंने अपने स्थिति काल का वर्णन नहीं किया है परन्तु कुछ लोग इन्हें 'विक्रमादित्य' का भाई भी मानते है। इनके बारे में ज्यादा स्पष्ट नहीं है परन्तु मतभेदों से यह प्राप्त है कि ये 600 ई०पू० के आस-पास ही हुआ करते थे।

महाकवि भारवि ने अपने स्थिति काल में एक रचना की है 'किरातार्जुनीयम्' जिसकी एक सूक्ति है -

"हितं मनोहारी दुर्लभम् वचः"

Paper Code A 0 2 0 1 0 1 T

3

उत्तर - 1 (ग)

भर्तृहरि प्रणीत नीतिशतक की महत्वपूर्ण नैतिक शिक्षाएँ

'भर्तृहरि' ने नीतिशतक नामक रचना की है। जिसमें बहुत सी नीति परक, राजनैतिक, विद्यारूपी सभी प्रकार की शिक्षाएँ प्राप्त होती है।

(i) विद्या की विशेषता :- महाकवि भर्तृहरि ने अपनी रचना में लिखित श्लोकों में अत्याधिक गहराई से विद्या व विद्वानों का वर्णन किया है। उनके अनुसार - विद्या ही सभी यश, कीर्ति, सम्मान को देने वाली है। जिसके पास विद्या, तप, यश, कीर्ति नही नही होती है वह इस पृथ्वी पर भार होकर पशु के समान है।

" येषां न विद्यां न तपों न दानम्
ज्ञानं न शीलं भुविभारभूता।"

इससे स्पष्ट है कि इनके द्वारा रचित नीतिशतक में अधिक से अधिक नैतिक शिक्षाएँ है।

(ii) सत्संगति :- इन्होंने अपनी रचना में सत्संगति का बहुत ही उत्कृष्ट वर्णन किया है। सत्संगति जड़ता को दूर करती है सत्यता को वाणी पर लाती है, नीति को बढ़ाती है, चारों दिशाओं में यश को फैलाती है।

(iii) इन्होंने बताया कि साहित्य, कला से विहीन मनुष्य पशु के समान होता है।

(iv) विद्वान प्रत्येक स्थान पर पूजनीय है।

"विद्वानें सर्वत्र पूज्येत"

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code
A 0 2 0 1 0 1 T

4

उत्तर - 1 (घ)

कुमारसम्भवम् के पंचम् अंक का सार -

कुमारसम्भवम् :-

कुमारसम्भवम् के पंचम सर्ग का सार निम्न है।

कुमारसम्भवम् के पंचम सर्ग में माता पार्वती द्वारा की गई कठोर तपस्या का वर्णन है।
जब माता पार्वती को नारद जी द्वारा यह ज्ञात होता है कि उनका विवाह शिव जी के द्वारा ही साथ होगा तो वह तप के लिए अपनी माता से आज्ञा मांगती है किन्तु उनकी माता इनकी चिन्ता के बारे में सोचकर उनसे मना कर देती है किन्तु कहा गया है कि - हठी व दृढ़ निश्चय वाले व्यक्ति को उसी प्रकार नहीं रोक सकते हैं जिस प्रकार गिरते हुए पानी को नहीं रोक सकते हैं।
अतः माता की आज्ञा प्राप्त कर वह अपनी सखी द्वारा पिता की आज्ञा प्राप्त करती है। पिता अपनी पुत्री की स्थिति जानकर उन्हें आज्ञा दे देते हैं। फिर माता पार्वती गौरी से परिपूर्ण पर्वत की शिखर पर तप करने के जाती है। वह शिखर उनके ही नाम से 'गौरी शिखर' प्रसिद्ध हो जाता है।
माता पार्वती का मन कामदेव को भस्म होता देखकर अति खिन्न होता है और वह अपने रूप की निन्दा करती है।
अन्त में शिव जी माता पार्वती की परीक्षा भी लेते है। उसमें माता पार्वती उत्तीर्ण होती है।
यहाँ 'कुमारसम्भवम्' का पंचम अंक समाप्त होता है।

Paper Code
A U 2 0 1 0 1 T

उत्तर -1 (ङ)

" पदं सहेत भ्रमरस्य पेलवं शिरीषपुष्पं न पतत्रिणः"

सन्दर्भ :- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक संस्कृत के 'कुमारसम्भवम्' नामक पाठ से उद्धृत है। इसके रचयिता 'संस्कृत के महाकवि कालिदास' है।

सुक्ति का अर्थ :- शिरीष नामक पुष्प भ्रमर के भार को सहन कर सकता है किन्तु पक्षी के भार को सहन नहीं कर सकता है।

सुक्ति की व्याख्या :- प्रस्तुत सुक्ति से महाकवि कालिदास माता मैना द्वारा अपनी पुत्री की चिन्ता के बारे में सोचकर यह कहती है - मेरी पुत्री यहाँ राजमहल में रहने वाली है, वह कोमल मखमले शयन में शयन करती है वह कोई भी ऐसा कार्य नहीं करती जिससे वह थकित है। कठोर तपस्या कर पाना उसके लिए उसी प्रकार कठिन है जिस प्रकार अधिक कोमल शिरीष पुष्प भौरे के भार को तो सहन कर लेता है किन्तु पक्षी के भार को सहन नहीं कर पाता है।

विशेष :-
(i) इसमें 'अतिशयोक्ति अलंकार' का प्रयोग किया है।
(ii) माता पार्वती की तुलना कोमल शिरीष पुष्प से की है।

Do Not Write anything in this Portion

उत्तर - 1 (च)

कौटिल्य का अर्थशास्त्र :-

कौटिल्य एक मात्र ऐसे रचनाकार है जिन्होंने अर्थशास्त्र को इतनी गहराई से अध्ययन किया है।
कौटिल्य के अर्थशास्त्र मे कौटिल्य की चाणक्य नीति का भी बता चलता है। कौटिल्य ने स्पष्ट किया कि धन या वृत्ति ही मनुष्य के आधार मे ज्ञान कराती है। वह उसी के द्वारा राजनीति, अर्थनीति, कूटनीति मे पारंगत हो सकता है।

कौटिल्य के अर्थशास्त्र के मुख्य विभाग

कौटिल्य या चाणक्य के अर्थशास्त्र के मुख्य विभाग मे राजनीति, कूटनीति, अर्थनीति आदि नीतियो का ज्ञान होता है
आजकल इसी अर्थशास्त्र को Economics से पढ़ा जाता है। इसी के अध्ययन द्वारा मनुष्य ब्याज, मूलधन, मिश्रधन आदि के बारे में जानकर अपने आमदनी, व्यवहार, व्यापार को चला रहा है।

इसके मुख्य विभागो में वृत्ति के द्वारा उसका सही अर्थ प्राप्त किया जाता है।
अर्थ का अर्थ ही - वृत्ति या धन है।
(धन) वृत्ति का ज्ञान होना ही अर्थ शास्त्र को परिपूर्ण करता है।

Paper Code
P 0 2 0 J 0 J 7

उत्तर - 1 (ह)

" सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम् "

सन्दर्भ :-

प्रस्तुत सूक्ति हमारी पाठ्य पुस्तक संस्कृत के ' नीतिशतकम् ' नामक अध्याय से अवतरित है। इसके रचयिता महाकवि भर्तृहरि है।

सूक्ति का अर्थ :-

बताइए कि सत्संगति क्या नहीं करती है। अर्थात सब करती है।

सूक्ति की व्याख्या :-

प्रस्तुत सूक्ति में कवि भर्तृहरि ने सत्संगति की विशेषता का उच्च वर्णन किया है। इन्होंने अपने नीतिशतक में सत्संगति की विशेषता का वर्णन करते हुए कहा है कि-

सत्संगति जड़ता या मूर्खता को हरती है उसे समाप्त करती है, वाणी में सत्यता लाती है। मान को सम्मान को बढ़ाती है। चारों दिशाओं में यश को फैलाती है। नीति को बढ़ाती है। चित्त हृदय को प्रसन्न रखती है। बताओ सत्संगति क्या नहीं करती, अर्थात् सत्संगति सब कुछ करती है।

विशेष :-

इसमें सत्संगति की विशेषता बताई गई है। इसमें शान्त रस व प्रसाद गुण है।

Do Not Write anything in this Portion

उत्तर - 1 (ज)

योग :-

योग ऐसा शब्द है जिसका युग में अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान है। यह रोगी व्यक्ति व निरोगी दोनों के लिए भी महत्वपूर्ण है। आज के युग के व्यक्ति इसे यथार्थ रूप से इसे करते है।
योग शब्द को। उत्पत्ति 'युज्' नामक धातु से हुई है।
यह एक दर्शन भी है। जिसे 'योग दर्शन' के नामक से जानते है।
इसके प्रवर्तक 'महर्षि पतञ्जलि' है।

अष्टांग योग :-

योग के आठ अंग होते है जो अष्टांग योग कहलाते है।

(i.) यम
(ii) नियम
(iii) आसन
(iv) प्राणायाम
(v.) प्रत्याहार
(vi.) ध्यान
(vii) समाधि
(viii) धारणा

यह अष्टांग योग मनुष्य के लिए अति महत्वपूर्ण है।

योग दर्शन में पतञ्जलि ने सभी रोगों का एक ही निवारण योग बताया है।
"योगः नित्यम् कुरु।"

Paper Code A020101T

उत्तर - 1 (अ)

महाकवि वाल्मीकि का ~~संस्कृति~~ संस्कृत साहित्य में अवदान

महाकवि वाल्मीकि के बारे में कहा जाता है कि यह पहले डाकू रत्नाकर थे परन्तु बाद में इन्होंने अपने इस कार्य का परित्याग कर दिया क्योंकि इन्होंने जब यह अहसास किया कि इनके इस कृत में कोई भागीदार नही है तो इन्होंने ऐसे कार्य को छोड़ दिया।

ब्रह्मा जी के आशीर्वाद से इन्होंने राम-राम का जाप किया किन्तु यह राम-राम न कहकर मरा-मरा कहने लगे।

इन्होंने ब्रह्मा जी के कहने पर 'वाल्मीकि रामायण' रचित की। इसमें इन्होंने राम के बारे में वर्णन किया है। यह संस्कृत का अत्यधिक महत्वपूर्ण महाकाव्य है।
वाल्मीकि द्वारा रचित 'वाल्मीकि रामायण' एक महाकाव्य है इसमें करुण रस की प्रधानता है।
इसमें सात काण्ड है -

(i) बालकाण्ड
(ii) अयोध्याकाण्ड
(iii) अरण्यकाण्ड
(iv) किष्किन्धाकाण्ड
(v) सुन्दरकाण्ड
(vi) लंका काण्ड
(vii) उत्तरकाण्ड

इस प्रकार वाल्मीकि ने संस्कृत साहित्य में वाल्मीकि रामायण नामक महाकाव्य दिया है।

Do Not Write anything in this Portion

'खण्ड ब'

'दीर्घ उत्तरीय प्रश्न'

(4) लभेत - - - - - - - -
— — — — — . मूर्खजनचित्तमाराधयेत ||

सन्दर्भ :- प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्य पुस्तक संस्कृत के 'नीतिशतकम्' नामक अध्याय से अवतरित है। इसके रचयिता 'महाकवि भर्तृहरि' है।

प्रसंग :- प्रस्तुत श्लोक में यह बताया गया है कि हम प्रत्येक कठिन कार्य को सरलता से कर सकते है। किन्तु मूर्ख व्यक्ति के हृदय को उसके चित्त को प्रसन्न नही कर सकते है।

श्लोक की व्याख्या :- प्रस्तुत श्लोक नीति की बातों से परिपूर्ण है किन्तु इसमे मूर्ख व्यक्ति के स्वभाव का यथार्थरूप से वर्णन किया गया है कि हम प्रत्येक कठिन या असम्भव कार्य जैसे - बालू के कण को पीस कर उसका तेल निकाल सकते है। हम मारीचिका में भी प्यासे होने पर पानी को प्राप्त कर उसमे पानी पी सकते है। कही बाहर भ्रमण जाने पर भी हम ऐसा

कुछ प्राप्त कर सकते है जिसकी हमें कल्पना न हो तात्पर्य यह है कि हम प्रयत्न करते हुए खरगोश के सिंह भी देख सकते है।
हम यह सभी कार्यों को कर सकते हैं किन्तु मूर्ख व्यक्ति के चित्त को प्रसन्न नही कर सकते है।

कवि का आशय है कि सभी असम्भव कार्यों को किया जा सकता है किन्तु मूर्ख व्यक्ति के हृदय को प्रसन्न करना उसे संतुष्ट करना यह असम्भव है।

विशेष :-

इसमें मूर्ख पद्धति का वर्णन है।
इसके द्वारा मूर्खों की विशेषता पता चलती है।

अलंकार – अतिशयोक्ति अलंकार
छन्द – शार्दूलविक्रीडित छन्द
रस – शान्तरस ~~अर्थान्तरन्यास~~ , ~~वृत्यनुप्रास~~
रीति – वैदर्भी
गुण – प्रसाद

प्रस्तुत श्लोक में भर्तृहरि ने नैतिक कर्तव्यों का भी स्पष्ट व्याख्या से मूर्ख पद्धति का स्पष्ट यथार्थ चित्रण दिया है।
इस श्लोक मे बताए गए सभी कार्य असम्भव है परन्तु मूर्ख व्यक्ति के मन को प्रसन्न करना उससे भी ज्यादा असम्भव कार्य है। यह स्पष्ट किया गया है।

Do Not Write anything in this Portion

खण्ड 'स'

। दीर्घ उत्तरीय प्रश्न।

(6) सूत्र की व्याख्या उदाहरण सहित:-

(1) " इकोयणचि "

व्याख्या :-

इक् प्रत्याहार (इ, उ, ऋ, लृ) के बाद असमान स्वर (अच् प्रत्याहार) के आने पर इक् प्रत्याहार, यण् प्रत्याहार (य्, व्, र्, ल्) में परिवर्तित हो जाता है।

इस सूक्त का प्रयोग 'यण् स्वर सन्धि' में होता है।
इस सूत्र के द्वारा हम यण् सन्धि के उदाहरणों मध्वरि, स्वागतम्, प्रत्येक, पित्राज्ञा, लाकृति का वर्णन कर सकते हैं।

उदाहरण :-

(i) मध्वरि:-

मधु: + अरि:
मधु उ + अरि { उ + अ = व
उ के बाद अ आने पर उ का व् मे परिवर्तन हो जाता है।
मध् वरि:
मध्वरि:

इसे निम्न प्रकार से लिखा जा सकता है।

उ का व् में परिवर्तन
मधु + अरि:
मध् उ + अरि
मध् वरि:
मध्वरि:

(ii) स्वागतम् :—

सु + आगतम्
स् उ + आगतम्
उ का व् में परिवर्तन
स् वागतम्
स्वागतम्

(iii) प्रत्येक :—
इसमें इ का य् में परिवर्तन होता है।

प्रति + एक:
प्रत् इ + एक:
(इ का य् मे परिवर्तन)
प्रत् य् एक   { य् + ए = ये }
प्रत् येक:
प्रत्येक:

(iv) पित्राज्ञा: :—
इसमें ऋ का र् मे परिवर्तन होता है।

Do Not Write anything in this Portion

पितृ + आज्ञा:
पित् ऋ + आज्ञा
{ ऋ के बाद अ आने पर र् में परिवर्तन }

पित् र् आज्ञा
पित् राज्ञा:
पित्राज्ञा:

अत: इन निम्न उदाहरणों से 'इकोयणचि' सूत्र की स्पष्ट व्याख्या होती है।

(v) लाकृति :—

इसमें लृ के बाद अ आने पर ल् हो जाता है।

लृ + आकृति
ल् + आकृति { लृ + अ = ल् }
लाकृति

अत: उपरोक्त उदाहरण द्वारा इस सूत्र व्याख्या पूर्ण होती है।

Paper Code

15

Do Not Write anything in this Portion

X

Paper Code

17

Paper Code

18

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

19

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

20

X

Paper Code

21

X

Paper Code

22

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

23

X

Paper Code

24

Do Not Write anything in this Portion

X